INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित स्त्री के सामाजिक स्वरूप का अध्ययन

डॉ. सीमा तिवारी
सहायक अध्यापिका (हिन्दी)
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
पुरैला, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/08.2021-25132661/IRJHIS2108007

प्रस्तावना:

मैत्रेयी पुष्पा का जीवन वृत्त और व्यक्तित्व :

मैत्रेयी जी का जन्म 30 नवम्बर 1944 को अलीगढ़ जिले के सिर्कुरा गाँव में हुआ। मैत्रेयी पुष्पा को अपने गाँव सिर्कुरा से बहुत लगाव था, इसलिए उनकी कृतियों में सिर्कुरा गाँव का उल्लेख बार–बार आया है।

मैत्रेयी की माँ आधुनिक विचारों वाली महिला थी। मैत्रेयी के पालन–पोषण में कोई कमी नहीं रखी। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म आजादी के तीन साल पहले हुआ। इस हिसाब से तो मैने गुलाम देश में जन्म लिया है। लेकिन मैं जिस उम्र की बात कर रही हूँ वह अज्ञेय शैशव था और शिशु के लिए गुलामी–दासता जैसी बेबसी का कोई अर्थ नहीं होता है। वह तो हर बंधन को तोड़ डालने में विश्वास रखता है।

मैत्रेयी पुष्पा जन्म से ही ढीठ और बेबाक महिला साहित्यकार रही हैं जो इनकी कृतियों में स्पष्ट दिखाई देता है। बचपन में ही पिता हीरालाल का साया सिर से उठ गया था। परिवार का उत्तरदायित्व माता कस्तूरी पर आ गया था। पति की मृत्यु के बाद वह पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ा होने का दृढ़ संकल्प करती है। पिता की कोमल छत्रछाया तथा माँ की ममता भरी गोद के अभाव में मैत्रेयी का बचपन संघर्षमय तथा कांटो भरा बीता। शिक्षा ग्रहण करते समय मैत्रेयी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एक बार तो ऐसी स्थिति आयी कि उसमें प्रिसिंपल भी शामिल थे। मैत्रेयी ने उनके खिलाफ आवाज उठाई जिसके कारण रिस्टिकेशन तक बात पहुंच गयी और माँ को पता चल गया। ''माँ का आदेश– प्रिंसिपल से माफी माँग ले। बात यहीं तक है। अलीगढ़ इगलास होती तो लोग मदार गेट (वेश्याओं का इलाका) पहुँचा देते। माँ की बात पर मैत्रेयी हतप्रभ रह गयी थी। इस प्रकार मैत्रेयी जी को शिक्षा के प्रारम्भिक दौर से लेकर महाविद्यालय तक आते–आते अनेक जीवानुभवों से गुजरना पड़ा, जिससे जिंदगी के वास्तविक रूप से वह परिचित हुई। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए एम0एम0 तक शिक्षा प्राप्त करके लेखन कार्य आरम्भ किया।

मैत्रेयी का विवाह एक डॉक्टर से हुआ। इनके तीन पुत्रियाँ हुईं, तीनों ही डॉक्टर बनी। विवाह के पश्चात भी मैत्रेयी जी लेखन कार्य करती रहीं। मैत्रेयी जी स्वभाव से विद्रोही, जिद्दी, मेहनती और प्रयत्नशील नारी थी। यही कारण है कि उनकी कृतियों में अन्याय, अत्याचार, अहंकार, शोषण, व्यभिचार और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वाली नारी का चित्रण हुआ है।

स्त्री का सामाजिक स्वरूपः भारतीय संस्कृति में स्त्री का एक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान रहा है। वैदिक काल में स्त्री को सर्वोत्तम स्थान प्राप्त था–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यते सर्वास्त्रफलाः क्रियाः।।

जब अंग्रेजों का आगमन हमारे देश में हुआ तो नारी की स्थिति में काफी परिवर्तन आया। उसे देवी पद से हटाकर भोग्या रूप में स्वीकृत किया जाने लगा। धीरे–धीरे पुरूष वर्ग द्वारा उसे चारदीवारी में बंद कर उसका शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाने लगा। बहुविवाह, बाल विवाह, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा तथा दहेज प्रथा जैसी समस्याओं ने गौरवमयी भारतीय नारी को ग्रस्त कर लिया। स्त्री का स्थान पुरूषों के समक्ष नगण्य हो गया। वह बचपन में पिता, युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्रों के संरक्षण की वस्तु बन गयी। स्त्री जो पुरूष की जीवन संगिनी और सहधर्मिणी कही जाती थी, वह केवल दासी बनकर रह गयी। अंग्रेजों के आगमन से देश की स्वतंत्रता ही नहीं छीनी गयी बल्कि स्त्रियों की भी स्वतंत्रता छीन ली गयी। मुगल आये तो दास प्रथा का प्रचलन तेजी से बढ़ा। अमीर और उच्च घराने के लोग स्त्रियों को मनोरंजन का साधन समझने लगे। मुस्लिम शासक हिन्दू स्त्रियों को खरीद कर अपने हरम में रखते थे।

परिस्थितियां बदली नारी स्वतंत्रता का युग प्रारम्भ हुआ। स्त्री का आधुनिक स्वरूप हमारे सामने आया। आज की नारी अबला नहीं सबला बनकर आयी। वह अपने कर्तव्यों के निर्वाह के साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत है। प्रत्येक वर्ष 08 मार्च को महिला सशक्तिकरण के रूप में मनाया जाता है। नारी अपनी प्रतिभा और शिक्षा के कारण ही कई महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित कर रही है। भारत की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, अंतरिक्ष तक पहुँचने वाली कल्पना चावला, प्रथम महिला स्पीकर मीरा कुमार, प्रथम पूर्णकालिक महिला वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण इत्यादि के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि स्त्रियों को अपनी ताकत का एहसास हो गया है। ये समाज को नई दिशा प्रदान कर मानव जीवन के स्तर को ऊँचा उठायेगी।

बदलते परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन :

लड़कियों के उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद हमारे यहाँ की परम्परायें और मान्यताएँ ऐसी हैं जो लड़की के जन्म के साथ आरम्भ हो जाती है। परिवार चाहे कितना ही शिक्षित व आधुनिक क्यों न हो, लेकिन लड़की को लेकर उनके विचार संकुचित हो जाते हैं। शिक्षा के विस्तार के साथ पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव स्वरूप, विभिन्न कार्य क्षेत्रों में भागीदारी के कारण स्त्री–पुरूष में कोई भेद नहीं रह गया है। आज नारी स्वतंत्रता की चर्चा ही नहीं होती वरन पुरजोर वकालत भी की जाती है। इन सब के बावजूद अब भी स्त्री को समाज में जिस–तिस कारणों से विभिन्न प्रकार से विभिन्न परिस्थितियों में प्रताड़ित किया जाता है, ऐसे में कैसी स्वतंत्रता?

आधुनिकता की दौड़ में स्त्री बहुत कुछ पाने की इच्छा में स्वयं उपभोग की वस्तु बनकर पेश हो रही है। आज की स्त्री विवाहेत्तर सम्बन्ध बनाने में भी नहीं झिझकती। ईश्वर का दिया वरदान मातृत्व भी उसे स्वीकार नहीं। फिल्मों तथा विज्ञापनों में अपने अंगों का प्रदर्शन करती हुई दिखाई दे रही है। आज नारी का स्वरूप बदलता जा रहा है। इस बदलते परिप्रेक्ष्य के कारण ही स्त्री को दासी की अपेक्षा पुरूष की सहचरी माना गया है। बदलते स्वरूप के कारण ही परिवार और समाज के विकास, बच्चों के चरित्र निर्माण तथा देश उत्थान में उसकी महत्ता स्वीकार की गई है।

बदलते परिप्रेक्ष्य में यद्यपि नारी स्वतंत्रता को लेकर विभिन्न कार्यक्रम तथा सुझाव और कानूनी अधिकार दिये गये हैं फिर भी नारी स्वातन्त्र्य की वास्तविकताएं कुछ और ही हैं। एक तरफ तो घर की जिम्मेदारियों को संभालती है तो दूसरी ओर घर से बाहर निकलकर आर्थिक स्थिति का दायित्व भी उसके कन्धों पर आ जाता है। इतना करने पर भी उसे स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेने का अधिकार नहीं रहता।

बीसवीं सदी में आने के बाद स्वयं को हर क्षेत्रों में सक्षम सिद्ध करने के बाद भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आज उपभोक्तावादी संस्कृति तथा विज्ञापन व्यवसाय ने उसे एक देह के रूप में ही चित्रित किया। विज्ञापन व्यवसाय को स्पष्ट करते हुए शिवकुमार मिश्र जी कहते हैं– ''इन विज्ञापनों को देखकर लगता है कि सचमुच हिन्दुस्तान नई सदी में पहुँच गया है। कदाचित ही कोई विज्ञापन हो जिसमें नारी और नारी देह का व्यावसायिक इस्तेमाल न होता हो।''

इक्कीसवीं सदी में भी समाज एक तरफ तो लड़कियों की शिक्षा और स्वातंत्र्य की बात करता है तो दूसरी तरफ उसे गर्म में ही मार दिया जाता है। तसलीमा नसरीन ने नारी की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि– ''ये पौधे भी पीपल की तरह बढ़ सकते हैं, लेकिन मिट्टी नहीं है। वैसी उर्वर मिट्टी नहीं है, जिसमें मनचाहे ढंग से बढ़ा जा सके। जो मिट्टी है उसमें भी कंकड़ पत्थर ज्यादा है, पानी नहीं है, खाद नहीं है, इसलिए इसमें पौधे बड़े नहीं होते।''

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित स्त्री का सामाजिक स्वरूप :

मैत्रेयी जी ने अपनी कहानियों में स्त्री के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया है। उनकी कहानी में जो स्त्री चित्रित हुई है वह एक ओर तो शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने वाली तथा अपने अधिकारों के लिए विद्रोह करने वाली है तो दूसरी ओर विभिन्न परिस्थितियों में संघर्षों से भी जूझ रही है। वह कहीं वैवाहिक संस्था द्वारा छल का शिकार होते हुए दिखती है तो कहीं परम्परागत रूढ़िवादी सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं के बीच पिस रही है। मैत्रेयी जी की कहानियों की स्त्रियाँ विवाहेत्तर सम्बन्ध बनाने में भी संकोच नहीं करती। पुरूषवादी मानसिकता के खिलाफ संघर्ष करती हुई नजर आती है। मैत्रेयी जी की कहानियों में जो स्त्री चित्रित हुई उसकी निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत अध्ययन करेंगे–

1. पुरूषवादी मानसिकता पर गहरी चोट–

मैत्रेयी पुष्पा की कथा साहित्य की स्त्रियाँ अधिकतर ग्रामीण या कस्बाई परिवेश की हैं, जो शिक्षा और आधुनिक तकनीक से दूर हैं, उन्हें रूढ़िवादी मानसिकता से निकालने वाला कोई पथ प्रदर्शक नहीं है। वे स्वयं अपनी लड़ाई लड़ते हुए पुरूष के वर्चस्व को तोड़ने का प्रयास कर रही है। उनकी यह लड़ाई पुरूषवादी मानसिकता के अलावा समूचे समाज से है, थोपी गयी सामाजिक–सांस्कृतिक परम्पराओं से है और रूढ़ियों से

है। वह अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है। 'केतकी' कहानी में लेखिका ने दिखाया कि किस तरह केतकी पंचायत के सामने अपने साथ हुए व्यभिचारों के बारे में बताते हुए कहती है– ''मैं किसका हाथ पकड़ लूँ पुत्र–सरीखे बालक मणिकान्त या पिता समान ससुर का....? मुझे तो आपका हाथ पकड़ना चाहिए। इतना कहकर उसने गंधर्व सिंह को ऊँचे आसन से बलपूर्वक नीचे खींच लिया। ''आपका अंश मेरे गर्भ में है।'' कहते ही गन्धर्व कांप उठता है। गंधर्व सिंह सोचता था कि मैं तो ग्राम प्रधान हूँ मुझे कोई कुछ नहीं कर पायेगा। केतकी के साहस से ही गंधर्व सिंह जेल चला जाता है। लेखिका ने जैमन्ती के माध्यम से 'रास' कहानी में पुरूष की घिनौनी मानसिकता पर कड़ा प्रहार किया है। जैमन्ती देखने में सुन्दर, सुशील और गायिका है परन्तु दहेज न होने के कारण उसका विवाह कम उम्र के अबोध व्यक्ति से कर दिया जाता है। ससुराल में अपने ससुर द्वारा ही उसका यौन शोषण करने की कोशिश की जाती है तो वह उसकी चप्पलों से पिटाई कर देती है और साथ ही ऐलान कर देती है– ''सबेरे मुँह अंधियारे मेरे पीहर पहुंचा आना, नहीं तो हल्ला कर दूंगी।''[6] 'रास' कहानी में जैमन्ती ने दिखा दिया कि नारी अपने शरीर की रक्षा भी कर सकती है और दुष्कर्म करने वाले पुरूष से मुकाबला भी कर सकती है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बारहवीं रात' की स्त्री पुरूष सत्ता को चुनौती देती है– ''हमारे जाने ब्याह भी जल्द से जल्द करेगें धमना वाले। वे रूपइया भिजवा दें तो हमारा सुरेन्द्र रिहा हो जाए बस। .... धमना वाले ठहरे बेटी वाले, बेचारे बेबस जीव।''[7]

सुरेन्द्र की अम्मा, होश में आओ। मालूम है, संदेश किसका था? नाई कह रहा था कि क्या करें धमना वाले, उनकी बिटिया अड़ी है कि 'दद्दा हमें कुंआरे रहना मंजूर है, कत्ल होने उनके घर नहीं....। 'बारहवीं रात' कहानी में पिता दहेज के अभाव में अपनी लड़की का विवाह ऐसे लड़के से करना चाहता है जो अपनी पूर्व पत्नी की हत्या के जुर्म में जेल में बंद है। लड़की इस शादी को करने से इन्कार कर देती है।

कहानी 'बिछुड़े हुए' में स्त्री के साहसिक रूप को दिखाया गया है। चन्दा का पति सुग्रीव सन्यास धारण करके शतानंद बन जाता है। बीस साल बाद गांव आता है तो उसकी बेटी मंगना के ब्याह की तैयारी चल रही है। गाँव के लोग शतानंद को पहचान जाते हैं। शतानंद सोच रहा है कि ''चन्दा रोएगी, कलपेगी। विनती, प्रार्थना करेगी।''[8]

यहाँ पर पुरूषवादी मानसिकता स्पष्ट दिखती है। चन्दा के साहसिक व्यक्तित्व को शतानंद अपनी आंखों से खुद देख रहा है। फिर भी अपनी पुरूषवादी मानसिकता का दंभ भर रहा है।

'आवारा न बन' की नीलू अपने कैरियर को प्राथमिकता देती है। जब नीलू ने बाक्सिंग के लिए पिता से इजाजत मांगी तो उन्होंने मना कर दिया। इसलिए नीलू ने घर से भागकर बॉक्सिंग में भाग लेकर फर्स्ट पोजीशन प्राप्त की। जिस प्रकार से समाज नारी पर लांक्षन लगाता है, उसी प्रकार नीलू का भाई कहता है– ''आ गई। गाँव भर में शोर है कि नीलू किसी यार के संग भाग गई। काला मुँह कर गई।''[9] परन्तु नीलू ने इस बॉक्सिंग के आधार पर पुलिस विभाग में नौकरी प्राप्त करके पुरूष वर्ग के मुंह पर तमाचा मारा।

'संबंध' कहानी में गौरी शिक्षित है और पत्र–पत्रिकाएँ लिखती है। फूलवती नाम की महिला उनके घर अपने बीमार पति को लेकर आती है। गौरी के दादा और कक्का ने उसके पति का इलाज तो करवाया परन्तु बदले में फूलवती का यौन शोषण किया। जब वह गर्भवती हो गई तो यह सोचकर कि कहीं संतान के लिए

जायदाद का बंटवारा न करवा ले। इसलिए डॉक्टर को घूस देकर उसका गर्भाशय ही निकलवा दिया। इस घिनौने कार्य का खुलासा गौरी ने अपनी किताब में कर दिया। इसलिए अम्मा गौरी से नाराज है परन्तु गौरी कहती है– ''अम्मा डर क्यों रही हो? भाभी बुरा क्यों मान रही है? शिकारियों के डर से कहीं शेरनी छिपती है? .. ... लेखक किसी तरह शेर से कम नहीं।''[10]

'सेंध' कहानी की कलावती विधवा है। उसका पति समाज सेवा का कार्य करता है। परिणामस्वरूप अपनी सारी जायदाद समाज कल्याण में लगा देता है। पति की मृत्यु के बाद कलावती पति के द्वारा किये गये कल्याणकारी कार्यों का फायदा उठाकर विभिन्न समितियों की सदस्या तथा सफल राजनेत्री बनकर दाँवपेंच से अपनी सम्पत्ति बढ़ाती है।

'गुनाहगार' कहानी में अवध बिहारी की पत्नी ने जब अपने पति से शिकायत किया कि देवर उससे छेड़खानी करता है, तो पति ने उसे अपना व्यवहार ठीक रखने के लिए कहा। इस पर उसने गुस्से से स्पष्ट कर दिया कि अपनी रक्षा स्वयं कर लेगी और इसके लिए उसने अपने देवर को जहर दे दिया। आज की नारी अपना यौन शोषण नहीं करवा सकती फिर चाहे उसे कितनी बड़ी सजा क्यों न सहनी पड़े।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि पुरूषों द्वारा नारी पर जो भी बेड़ियाँ और जंजीरे डाली गयी, उन्हें वह प्रत्येक स्तर पर तोड़ने का प्रयास करती है।

2. रूढ़िवादी विवाह संस्था के छल की शिकार स्त्री–

स्त्री और पुरूष इस समाज के महत्वपूर्ण अंग है। एक स्त्री और एक पुरूष के विवाह सूत्र में बंधने के बाद परिवार अस्तित्व में आता है। परिवार व्यक्ति और समाज के बीच की एक महत्वपूर्ण इकाई है।

डॉ. रोहिणी अग्रवाल के अनुसार– ''विवाह वासना पूर्ति के लिए किया गया सामाजिक अनुबंध नहीं है, न सन्तानोंपत्ति के लिए स्वीकारा गया दायित्व। विवाह मूलतः व्यक्ति के आत्म विकास का माध्यम है।[10]

विवाह परस्पर प्रेम का रिश्ता है किन्तु समाज में परस्पर प्रेम से ज्यादा पवित्रता को महत्व दिया जाता है। जो स्त्री इस पवित्रता के मापदण्ड को तोड़ती है उसे निर्लज्ज, कुलटा कहा जाता है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में भी बहुत सी स्त्रियों को इस उपाधि से नवाजा गया। पुरूषों पर यह नियम नहीं लागू होता। विवाह के संबंध में राजेन्द्र यादव जी ने इस प्रश्न को उठाया है कि पति–पत्नी में बहुत कुछ समानताएं होने पर भी त्याग केवल पत्नी को ही करना पड़ता है। विवाह संस्था में ऐसा क्या है कि जो समान रुचियों, शौक, साहित्य या अन्य उपक्रमों में स्त्री पुरूष के बीच परिचय और घनिष्ठता के सेतु बनते हैं। पति–पत्नी बनते ही सबसे पहले बलि उन्हीं की होती है। अक्सर यह त्याग पत्नी को ही करना पड़ता है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'मुस्कुराती औरते' की फूलकली मैडम आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है, वह बी.डी. ओ. के पद पर कार्यरत है परन्तु पति के व्यवहार से त्रस्त हैं। फूलकली मैडम कहती है– 'कुसुम बहन, मुझे नहीं पता था कि शादी की शर्तें पत्थर पर खुदी लकीरों की तरह होती हैं। उन लकीरों को कौन मिटा सकता है जबकि अपना भविष्य ही पत्थर हो गया हो। ..... शादी के बाद किसी भी लड़की को नया जन्म मिलता है, जीवन उसको अपनी तरह नहीं दूसरों की इच्छा से ढालना होता है।''[12]

कहानी 'मन नाहिं दस बीस' की चन्दना अपने बाल सखा स्वराज से प्रेम करती है परन्तु वह निम्न जाति का है। इसलिए चन्दना के पिता उसकी शादी दूसरे लड़के के साथ कर देते हैं। गौने वाली रात चन्दना

स्वराज से मिलने चली जाती है तो ससुराल वाले उसे प्रताड़ित करने लगते हैं। हर विपत्ति के लिए उसे जिम्मेदार ठहराया जाता। जब दस साल तक चन्दना के कोई संतान नहीं होती तो उसकी सास उस पर लांछन लगाती है– ''कच्चे गोद पेट डालें होंगे, फिर कहाँ से जनेगी पूत। हमारे तो करम खोटे थे कि ब्याह लाए छिनाल को।[13] जबकि चन्दना का पति नपुंसक था। यह बात उसकी सास जानती थी फिर भी वह कैसे स्वीकार करे।

कहानी 'ताला खुला है पापा' की बिन्दो निम्न जाति के अरविन्द से प्रेम करती है। विवाह संस्था का कठोर नियम विवाह सजातीय में ही होगा। अरविन्द के हर तरह से योग्य होने के बाद भी समाज की मान्यताओं के विरूद्ध लड़ने की ताकत पापा में न थी।

'रास' की जैमन्ती भी विवाह रूपी संस्था द्वारा छली जाती है। अनमेल विवाह और ससुर द्वारा यौन उत्पीड़न की कोशिश का जमकर विरोध करती है। ससुर को धक्का मारकर घर भाग आती है। जब माँ उसको माफी मांगने के लिए कहती है तो प्रत्युत्तर में कहती है– ''माफी मांगेगी मेरी जूती। हाँ, जानते बूझते अघोरियों के घर भेज रही हो।''[14]

मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानियों में दहेज की समस्या को भी दिखाया गया है जो समाज में नासूर बनी हुई है। 'साँप–सीढ़ी' के सुरजन सिंह ने जब अपनी बेटी रज्जो की शादी तय कर दी तो रज्जो के ससुर ने दहेज की माँग कर अपना असली चेहरा दिखा दिया। ''एक लाख के बिना भाँवर नहीं पड़ेगी और पचास हजार के बिना विदा नहीं होगी।''[15] 'बारहवीं रात' की धमना वाले की बेटी, 'ललमनियाँ की मौहरो', 'पिपरी का सपना' कहानी की रति तिवारी, 'राय प्रवीण' की सावित्री, 'पगला गई हो भगवती' कहानी की भागो, 'मुस्कुराती औरतें' की मनीषा चौहान आदि पात्र विवाह रूपी संस्था द्वारा छली जाती है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपनी कहानियों में विवाह के नकारात्मक पहलुओं को दिखाया जरूर है पर वह विवाह का विरोध नहीं करती। इनकी कहानियों में स्त्री अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई पड़ती है और अपना अस्तित्व बनाए रखना भी जानती है।

3. परम्परागत सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं से संघर्ष करती स्त्री–

पूर्वजों या पुरानी पीढ़ी द्वारा बनाये गये रीति–रिवाजों को परम्परा माना गया है। यही रीति–रिवाज, विचार और प्रथाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी परम्पराओं से विशेष लगाव होता है। समाज में बेटा–बेटी के संदर्भ में परम्पराओं का अलग ही रूप देखने को मिलता है। बेटी परम्परा का उलंघन करती है तो उसे जान से जाना पड़ता है, यदि बेटा करे तो उसे सम्मान मिलता है।

'पगला गई हो भगवती' में भागो कहती है– ''आज आँखें मुँद गयी? बेटा की गलती दिखाई नहीं दई तुम्हें? याद करौ माधो.... जे गलती तौ अनुसूइया ने करी थी .... बस जे ही। राक्षस .... जेही।''

मास्टर आन बिरादरी हतो सो का? भलौ मानस हतो। और जा बहू ..... जी तुम आरती उतार रहे .... जा कौन सी असल ठाकुर की जाई है जा तक हिन्द तक नइयां। .... माधो, आज दै दै बेटा का जहर ..... जैसे मेरी अनुसुइया को।''[16] इस कहानी में वह नारी है जो परम्परा से अपना हिसाब मांग रही है।

'ताला खुला है पापा' की बिन्दो सजातीय विवाह की परम्परा का विरोध करती है। बिन्दो अरविन्द नामक नाऊ जाति के लड़के से प्रेम करती है। बिन्दो जाति–पांति के बंधन को नहीं मानती। लेकिन माता–पिता इसका विरोध करते हैं। माँ कहती है– ''रंडी, यही डर था हमें। .... ब्राह्मण नाऊ में भेद भूल गई।''

अम्मा जो कह रही है, ठीक है कि गलत? मै भी जानती हूँ ब्राह्मण ऊँचे माने जाते हैं। नाऊ छोटी कौम। पर अरविन्द तो मुझे अपने से भी ऊँचा लगता है क्यों?[17]

'आक्षेप' की रमिया आर्थिक रूप से भले ही कमजोर हो लेकिन हर किसी के साथ अपना रिश्ता जोड़ लेती है। गाँव के गुण्डे की बच्चियों का पालन–पोषण करती है। गाँव में सभी के दुःख का भागीदार सबसे पहले रमिया ही बनती। इसके बावजूद समाज में उसे सम्मान नहीं प्राप्त था। ग्रामीण समाज उसे वेश्या कहकर पुकारता था। परन्तु रमिया ने अपनी निःस्वार्थ सेवाभाव से लोगों को अपने प्रति दृष्टिकोण बदलने हेतु मजबूर कर दिया।

मैत्रेजी जी की कहानी 'रिजक' में पूर्व से चली आती हुई परम्परा को तोड़ने का काम लल्लन ने किया। गाँव में प्रसूति का कार्य बसोर जाति की अनुभवी स्त्रियाँ करती थी। समय के परिवर्तन ने यह परम्परा समाप्त कर दी। जो लल्लन गाँव में प्रसूति का कार्य करती थी उसका कार्य परिवर्तित हो गया– ''गाँव में खबर फैल गयी, लल्लन मेम बनकर आई है। मड़ैया के आगे से जो निकलता, एक नजर उसकी ओर जरूर देखता।''[18]

बहेलिए' कहानी में जब भोली बलात्कार का शिकार होकर गर्भवती हो जाती है तो समाज के लोग तथा स्वंय उसकी माँ भी बलात्कार करने वाले को दोष न देकर अपनी ही बेटी पर लांक्षन लगाती है– ''छिनाल, बेहया..... बन संवरकर निकलती है गली कूचों में।''[19] इन सब का विरोध करते हुए कहानी की मुख्य पात्र गिरजा ने पुलिस तक इस केस को पहुंचाया।

मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानियों की स्त्री रूढ़िवादी परम्पराओं का विरोध करती है वह चाहे पारिवारिक हो, वैवाहिक हो, आर्थिक हो, यौन संबंधी हो या फिर जातीय हो।

4. विवाहेत्तर सम्बन्ध और स्त्री–

परिवार के निर्माण के लिए विवाह आवश्यक है। आधुनिकता की दौर में संयुक्त परिवार तो पहले ही टूट चुके हैं। एकल परिवार भी सुरक्षित नहीं है। पति–पत्नी में ही सामन्जस्य नहीं है। परिणामस्वरूप स्त्री विवाहेत्तर सम्बन्धों के प्रति आकर्षित हुई।

'उज्रदारी' कहानी की शांति विधवा है और उसका एक बेटा सोम है। पति की मृत्यु के बाद परिवार के लोग उसे प्रताड़ित करते है ओर उसकी मृत्यु की योजना बनाते हैं। इस बात की भनक शान्ति को लग जाती है और वह अपने बेटे को लेकर पास के गांव के प्रधान के यहाँ आश्रय लेती है। धीरे–धीरे दोनों में अवैध सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं। शान्ति अंत में प्रधान की सहायता से अपनी जायदाद पाने के लिए जेठ–जेठानी पर मुकदमा करती है। इस प्रकार आज की स्त्री अपना काम निकलवाने के लिए विवाहेत्तर सम्बन्ध स्थापित करने को उचित ठहराती है।

'गोमा हँसती है' की गोमा का विवाह एक आँख से काने तथा बदसूरत किड्ढासिंह से हो जाता है। गोमा ने घर और खेत का सारा काम संभाल लिया, उसे किड्ढासिंह से भी कोई परेशानी नहीं है लेकिन उसे बलीसिंह से प्रेम हो जाता है और उसके बेटे की माँ भी बन जाती है।

अनामिका जी के अनुसार– ''गोमा हंसती है' में मैत्रेयी पुष्पा एक बिल्कुल अलग तरह की ठस्सेदार देहातिन से मुखातिब है... बूढ़े पति से उसे कोई बैर नहीं, पर मन जहाँ रमता है, वहीं रमता है। वह नियति को अस्वीकार करते हुए तनकर खड़ी ही नहीं होती बल्कि अपने हक के लिए विद्रोह भी करती है।''[20]

'राय प्रवीण' की सावित्री भी अपने पति की जान बचाने के लिए अपनी देह का सौदा करती है। सावित्री का पति उसे त्याग देता है। समाज कुलटा, वेश्या, बदचलन नाम से सम्बोधित करता है, परन्तु जब उसकी आत्महत्या की झूठी खबर गांव में फैल जाती है तो वही समाज उसे बहादुरी का खिताब देता है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में स्त्री के सामाजिक स्वरूप का अध्ययन के परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने स्त्री की मौन छटपटाहट को वाणी प्रदान की है। मैत्रेयी जी ने अपनी कहानियों में महानगरों की स्त्री नहीं अपितु ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियों को स्थान दिया। ये स्त्रियाँ रूढ़िवादी परम्पराओं और संस्कृतियों से संघर्ष करती हुई अपने लक्ष्य तक पहुंचती है। अब ये समाज के हाथों की कठपुतलियाँ नहीं है वे स्वतंत्र निर्णय लेना सीख गयी हैं। आज की स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करके अपने अधिकारों को तो प्राप्त करती ही हैं, साथ ही दूसरी स्त्री पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध भी आवाज उठा रही हैं। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए वह विवाहेत्तर संबंध बनाने से भी गुरेज नहीं करती। पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. मैत्रेयी पुष्पा, गोमा हँसती है, पृष्ठ 7 ।
2. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृष्ठ 92 ।
3. शिव कुमार मिश्र, स्त्री मुक्ति का सपना, पृष्ठ 28 ।
4. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, पृष्ठ 52 ।
5. मैत्रेयी पुष्पा, केतकी, पृष्ठ 156 ।
6. मैत्रेयी पुष्पा, रास, पृष्ठ 145 ।
7. मैत्रेयी पुष्पा, बारहवीं रात, पृष्ठ 91 ।
8. मैत्रेयी पुष्पा, बिछुड़े हुए, पृष्ठ 80 ।
9. मैत्रेयी पुष्पा, संबंध, पृष्ठ 116 ।
10. डॉ. रोहिणी अग्रवाल, हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिला, पृष्ठ 254 ।
11. राजेन्द्र यादव (सं०), हंस, जुलाई 2003, पृष्ठ 30 ।
12. मैत्रेयी पुष्पा, मुस्कुराती औरतें, पृष्ठ 16 ।
13. मैत्रेयी पुष्पा, मन नाहिं दस बीस, पृष्ठ 71 ।
14. मैत्रेयी पुष्पा, रास, पृष्ठ 146 ।
15. मैत्रेयी पुष्पा, साँप–सीढ़ी, पृष्ठ 94 ।
16. मैत्रेयी पुष्पा, पगला गई हो भगवती, पृष्ठ 31 ।
17. मैत्रेयी पुष्पा, ताला खुला है पापा, पृष्ठ 86 ।
18. मैत्रेयी पुष्पा, रिजक, पृष्ठ 20 ।
19. मैत्रेयी पुष्पा, बहेलिए, पृष्ठ 41 ।
20. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, पृष्ठ 133 ।